IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

भारतीय एवं वैश्विक परिपेक्ष में हिंदी-भाषा की उपदेयता का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ मुकेश कुमार
असि. प्रो. हिंदी
विजय सिंह पथिक राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय कैराना, शामली (उ. प्र.)

बीज शब्द ; सशक्तिकरण ,संपादकीय ,व्यक्तित्व ,वैश्विक ,तकनीकी ,मजबूरी ,उपयोगीता,उपनिवेश ,अस्मिता ,विश्व बाजार ,सूचना तंत्र |

"हिन्दी आज केवल भारत की भाषा नहीं ,बल्कि विश्व समुदाय की संपर्क भाषा के रूप में उभर रही है"

(कन्हैया लाल नंदन ,संपादकीय ,गगनांनचल ,जुलाई –सितंबर ,1999)

किसी भी भाषा के वैश्विक स्वरूप का निर्माण मूलतः इसे प्रयोग में लाने वाली जनता की बौद्धिक परिपक्वता, आर्थिक विकास एवं सशक्तिकरण पर निर्भर करता है। कहने का आशय यह है कि जो राष्ट्र आर्थिक एवं तकनीकी रूप से विकसित होगा, उस राष्ट्र की भाषा का विकास एवं प्रसार वैश्विक होगा। भाषा का विकास एवं अवसान वास्तव में उपयोगिता की अवधारणा से जुड़ा है। शम्भूनाथ जी का मानना है कि " आज अक्सर किसी भाषा की ताकत की पहिचान इससे की जाती है की वह बाजार में कितनी दौड़ सकती है । इसमें संदेह नहीं है की आज बाजार में हिन्दी का एक दमकता रूप है । " (भारतीय अस्मिता और हिन्दी ,पृष्ठ .. 69 , सामयिक प्रकाशन , दिल्ली ,प्रथम संस्करण ,2012) भाषा एक माध्यम की तरह काम करती है। जिस भाषा में लोगों को सहूलियत एवं सहजता होगी, उस भाषा को अपनाना उनके लिए ज़रूरत एवं मजबूरी दोनों बन जाती है। आज यह सत्य है कि हिन्दुस्तान में केवल हिन्दी या अंग्रेजी के द्वारा हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास लगभग अधूरा ही है।

भाषा भावना से अधिक ज़रूरत (उपयोगिता) के अनुसार अपने चरित्र एवं स्वरूप का निर्माण करती है। अंग्रेजी भाषा को अपनाना या उसे तरजीह देना हमारी मजबूरी है, इसके बिना हम वैश्विक ज्ञान एवं व्यापार की दुनिया से अलग-थलग पड़ जाएँगे। आज चीनी एवं जापानी लोग अपनी भाषा से अधिक अंग्रेजी पर विश्वास करने लगे हैं। फ्रांस में भी जगह-जगह अंग्रेजी सिखाने वाले संस्थान खुल गए हैं। कारण यही है कि दुनिया के शक्तिशाली देशों यथा— अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, इटली आदि की भाषा अंग्रेजी है। इन देशों का वैश्विक व्यापार एवं तकनीकी हिस्सेदारी विश्व के कुल व्यापार का लगभग पचास फीसदी है। ज़ाहिर है कि हम अपने विकास एवं उन्नति के लिए विकसित देशों पर कुछ हद तक निर्भर रहते हैं। इनके साथ बेहतर तालमेल बनाए रखने के लिए उनकी भाषा की जानकारी हमारे लिए अनिवार्य हो जाती है। अमेरिका में भारतीयों को इसलिए भी ज्यादा तरजीह दी जाती है क्योंकि उनकी अंग्रेजी चीनी एवं जापानियों के बरक्स बेहतर यानी अमेरिकन अंग्रेजी से नज़दीक है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

इतिहास के संदर्भ में देखें तो एक समय अंग्रेजी, फ्रांसीसी एवं स्पेनी भाषा का लगभग सम्पूर्ण विश्व पर वर्चस्व था। लैटिन अमेरिकी देशों पर स्पेनी का प्रभाव आजतक दिखाई देता है। अंग्रेजी का प्रभाव दक्षिण अफ्रीका, एशिया एवं ऑस्ट्रेलिया तक विस्तृत है। औपनिवेशिक भाषा का विस्तार उपनिवेशों में अनिवार्य-सा हो गया। कुछ लाख लोगों की बोली-भाषा आज करोड़ों की जबान एवं वैश्विक संचार का माध्यम बन गयी है। साम्राज्यवादी शक्तियों की सुविचारित नीतियों के कारण औपनिवेशिक देशों के लोगों ने उनकी भाषा को अपनी बोली-भाषा से ज्यादा महत्व दिया।गगनांनचल ,पत्रिका के संपादक श्री कन्हैया लाल नंदन यह लिखते हैं कि " पिछले दिनों विश्व की एक स्तरीय और अन्तराष्ट्रीय संस्था ने अनेक कृतियों के अनुवाद प्रकाशित करके अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी की अंतराष्टीयता को प्रमाणित किया है " (गगनांचल ,जुलाई-सितंबर ,1999 ,पृष्ट ,,10) इस तरह के विचार नीरज कुमार चौधरी "भाषा –विमर्श " पत्रिका के माध्यम से रखते हुए कहते हैं ।"आज उपभोक्ताओं की रुचि को ध्यान में रख कर साहित्य लिखा जा रहा है , विश्व बाजार सूचना तंत्र से संचालित है । " (भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी ,भाषा –विमर्श ,अंक ,,19 ,दिसंबर 2017 ,पृष्ठ . 27) । विकास एवं उन्नति की अवधारणा को भाषा से जोड़कर देखा गया। भारत में अंग्रेजी भाषा के बगैर केवल क्षेत्रीय भाषा के बल पर हम आज भी ज्ञानार्जन एवं व्यापार में वैश्विक भागीदारी से वंचित हो जाएँगे। कल्पना कीजिए, भारत में अंग्रेजी को कुछ दिनों तक प्रतिबंधित कर दिया जाए तो विश्व की तो बात अलग, अपने राज्यों से भी संपर्क स्थापित करना कठिन हो जाएगा। दक्षिण एवं उत्तर-पूर्व के राज्यों से हमारा संपर्क लगभग समाप्त हो जाएगा। कहने का आशय यह है कि आज अंग्रेजी हमारे लिए अनिवार्य हो गयी है, इसके बिना हम पंगु होने की स्थिति में पहुँच सकते हैं।

भाषायी वर्चस्व की राजनीति में केवल भाषा का सवाल नहीं होता है। इस राजनीति में भाषा को आधार बनाकर संस्कृति, धर्म, परम्परा एवं इतिहास पर वर्चस्व-स्थापना की कोशिश होती है। भाषा, माध्यम एवं आधार का काम करती है। इसके द्वारा धर्म, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास को अभिव्यक्ति मिलती है। जब आधार एवं माध्यम को नष्ट कर दिया जाता है तो संवादहीनता की स्थिति में जनसामान्य अपनी परम्परा से कटकर इतिहास एवं संस्कृति के बोध को भूलने लगता है, उससे अलग हो जाता है। उसकी अपनी पहचान समाप्त हो जाती है। उसका अपना कोई परिचय नहीं रह जाता है। वह अपने अस्तित्व के बोध को विस्मृत कर देता है। वह केवल एक 'आदमी' के रूप में बच जाता है, जिसका अपना कुछ भी नहीं रहता। ज़मीन, भाषा, स्मृति एवं संस्कृति से तो वह अलग होता ही है, अंततः वह अपने आप से भी निर्वासित हो जाता है - आत्मनिर्वासित। वह केवल भौतिक रूप से मनुष्य के रूप में दिखाई देता है।

एक अनुमान के अनुसार लगभग सौ वर्ष पूर्व संसार में लगभग 6,000 भाषा-बोली का अस्तित्व था। अफ्रीका में लगभग 1,500 भाषाएँ बोली जाती थीं। भारत में लगभग 1650 भाषाओं (बोली) के अस्तित्व में होने की सूचना है। लेकिन यथार्थ में बहुत कम भाषाएँ सक्रिय हैं। पूरे अफ्रीका में मुश्किल से दस-बारह भाषाओं के स्वर सुनाई देते हैं, वहीं भारत में तीस-चालीस। कुछ भाषाओं में बातचीत करनेवालों की संख्या मात्र सैकड़ों एवं हजारों तक रह गयी है।

आज का हिन्दुस्तानी नौजवान अपनी स्मृति एवं इतिहास से कटा हुआ है, जिसके कारण उसे टुकड़ों-टुकड़ों (भगत सिंह, बोस आदि पर फिल्म बनाकर) में इतिहास से परिचित कराने की ज़रूरत महसूस की जाती है। वह फिल्म देखकर हतप्रभ एवं आश्चर्यचकित है। उसके कॉल सेन्टर्स एवं कम्पनियों (जहाँ वह काम करता है) में प्रवेश पाने के लिए इतिहास की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

ज़रूरत नहीं होती है। अपनी स्मृति एवं बोध के साथ युवक कॉल-सेन्टर्स की संस्कृति में रच-बस नहीं सकता है। इसलिए उसके इतिहास से उसे दूर ही रखा जाता है। 'भूमण्डलीकरण' वास्तव में एक नवीन औपनिवेशिकता की मनःस्थिति में हमें पहुँचाता है। हम आज पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हैं। हमारे दैनिक क्रिया कलापों पर उनका एक तरह से नियंत्रण है। नवीन साम्राज्यवादी शक्तियों ने हमारी इच्छाओं एवं बोध पर नियंत्रण स्थापित किया है। हम अपनी इच्छा से कुछ भी निर्णय लेने की स्थिति में नहीं हैं। एक तरह से निर्णयहीनता की स्थिति में पढ़ा-लिखा हिन्दुस्तानी स्वयं से संघर्ष कर रहा है। खान-पान, बोल-चाल एवं पारस्परिक व्यवहार के लिए हमारे पास बना बनाया ढाँचा उपलब्ध है जिनकी सीमाओं का उल्लंघन करना एक तरह से असंभव है। अगर आप उन निर्धारित सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं तो सभ्य समाज में आपके लिए जगह नहीं है। धोती-कुर्ता पहनकर कोई हिन्दुस्तानी युवक हिन्दी में बोलकर, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा निर्मित समाज में प्रवेश नहीं कर सकता है। उसके लिए एक निर्धारित 'ड्रेस-कोड' एवं 'कल्चर' है। वहाँ वह मनुष्य होने के अतिरिक्त सब कुछ है। उसकी पहचान उसके पास उपलब्ध वस्तुओं से स्थापित होती है, अगर वह सड़क पर फटेहाल स्थिति में है तो वह जानवर से भी बदतर स्थिति में अपने को पाता है।

उपर्युक्त दलीलों के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज के संदर्भ में भाषा का सवाल बहुत व्यापक है। यूँ कह सकते हैं कि भाषा की उन्नति एवं अवसान का प्रभाव हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। निजी एवं सार्वजनिक जीवन इससे प्रभावित होता है। जो भाषा में नहीं है उसकी कल्पना हम जीवन में भी नहीं कर सकते हैं।

जोगेन्द्र सिंह अपने शोध निष्कर्ष के आधार पर यह कहते हैं कि " हिन्दी भाषा–भाषियों का विश्व जनसंख्या में बढ़ता हुआ प्रतिशत भी इस बात का प्रमाण है कि विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा –भाषियों की विश्व में राजनीतिक ,सामाजिक तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ रही है और बहुभाषा-भाषी भारत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान निरंतर आवशयक होता जा रहा है । " (हिन्दी की विश्व व्याप्ति ,डॉ जोगेन्द्र सिंह ,पृष्ठ .. 55 , अनंग प्रकाशन , दिल्ली ,प्रथम संस्करण .. 2006) हिन्दी के वैश्विक स्वरूप पर विचार करने से पहले उसके क्षेत्रीय स्वरूप एवं प्रकृति का विश्लेषण करना हमारे लिए जरूरी हो जाता है। क्योंकि जिस भाषा की स्थिति अपने मूल स्थान पर बेहतर एवं विकसित होती है, उसी में ही वैश्विक स्वरूप ग्रहण करने की क्षमता भी निहित होती है। हिन्दुस्तान में हिन्दी राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा बनने की ओर अग्रसर है। दक्षिण के राज्यों में हिंदी के प्रति विरोध का स्वर धीमा हुआ है। कुछ स्थानों को अगर हम छोड़ दें तो हिन्दी को धीरे-धीरे अहिन्दी भाषी राज्यों में स्वीकृति मिल रही है। उत्तर-पूर्व एवं सुदूर दक्षिण के पढ़े-लिखे लोग हिंदी को व्यवहार में लाने लगे हैं, क्योंकि आज उनके लिए यह ज़रूरत बन गयी है। दिल्ली से विमुख या दूर होकर एक सामान्य जीवन तो जिया जा सकता है लेकिन शक्ति का उपार्जन करना मुश्किल होगा।

अब सवाल यह है कि आँकड़ों के लिहाज़ से तो हिन्दी विकसित हो रही है, लेकिन गुणवत्ता एवं अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी की स्थिति क्या है? डॉ करुणा शंकर उपाध्याय अपनी पुस्तक 'हिन्दी का वैश्वीक संदर्भ' में लिखते हैं कि "अभी हाल ही में गूगल के एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि विगत एक वर्ष में सोशल मीडिया में हिन्दी प्रयोग में 94 फीसदी की बढ़ोतरी हुआ है जबकि अंग्रेजी प्रयोग में केवल 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैं" (हिन्दी का वैश्वीक संदर्भ ,पृष्ठ ..27 , 2016 राधा कृष्ण प्रकाशन ,दिल्ली) इसी पुस्तक मे जयंती प्रसाद नौटियाल निष्कर्ष रूप मे लिखते है कि " विश्व में हिन्दी जानने

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

वाले सबसे अधिक हैं। चीनी भाषा यथार्थ मंदारिन जानने वालों की संख्या हिन्दी के काफी पीछे है। आज जनसंख्या के हिसाब से विश्व में मंदारिन जानने वालों की संख्या 1050 मिलियन है " (हिन्दी का वैश्वीक संदर्भ ,पृष्ठ .. 13-14)। हिन्दुस्तान में हिन्दी, अंग्रेजी के सहारे या सहयोग से आगे बढ़ रही है — यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। यह हमारे बीच उपस्थिति एक यथार्थ है, जिस पर गंभीरतापूर्वक और सावधानी से विचार करना होगा। भाषाओं के उत्थान-पतन के इतिहास के आलोक में हम देखें तो पाएँगे कि सहयोगी भाषा में आश्रित भाषा का अस्तित्व धीरे-धीरे समंजित हो जाता है और कुछ अंतराल के बाद आश्रित भाषा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने लगती है उसकी पहचान ही नष्ट हो जाती है। इसलिए हिंदी के विकास के संबंध में बहुत उत्साहित होने की ज़रूरत मुझे महसूस नहीं हो रही है। मैं शुद्धतावादी हिंदी का पक्षधर नहीं हूँ लेकिन अंग्रेजी का भी एक तरफा समर्थन नहीं किया जा सकता है। इससे अपने अस्तित्व को खो देने का संकट उपस्थित हो जाता है।

विद्वानों का मानना है कि बाज़ार एवं सिनेमा ने हिंदी के विकास में भारी योगदान दिया है। लेकिन सिनेमा एवं बाज़ार किस हिंदी के पक्ष में हैं इस पर हमें विचार करना होगा। 6 अप्रैल, 2010 को 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में एक शोध-रिपोर्ट का प्रकाशन हुआ था। उसमें कहा गया है कि बॉलीवुड में हिंदी का प्रयोग पारस्परिक व्यवहार में लगभग चार फीसदी तक सीमित हो गया है। कलाकार एवं उनके सहयोगियों की भाषा लगभग शत प्रतिशत अंग्रेजी है। कलाकार रोमन लिपि में लिखी हुई हिंदी पढ़ते हैं, देवनागरी लिपि का ज्ञान उन्हें नहीं है। फिर हम कैसे मान सकते हैं कि हिंदी फिल्मों एवं गानों ने हिंदी के विकास एवं विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम गौर से देखें तो सिनेमा के पात्र अंग्रेजी के सहारे हिंदी बोलते-नज़र आते हैं। अधिकांश हिन्दी सिनेमा के शीर्षकों में अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है। पूरे वाक्य में एक-दो शब्द हिंदी के होते हैं, बाकी शब्द अंग्रेजी के ही प्रयुक्त होते हैं। कहीं-कहीं तो हिंदी के का, के, की, ने, से ही पूरा वाक्य गढ़ लिया जाता है। हिंदी में जिन तेरह लाख शब्दों की बात होती है, वे कहाँ प्रयुक्त होंगे? अगर उनका प्रयोग नहीं होगा तो क्या वे लम्बे समय तक जीवित रह पाएँगे? 'थ्री इडियट' की भाषा को क्या आम हिंदुस्तानी समझ सकता है? सवाल यह उठता है कि 'थ्री इडियट' जैसी फिल्में किसके लिए बनती हैं? किसी भी भाषा की प्राणशक्ति आमजन में होती है, चंद पढ़े-लिखे लोगों में नहीं। कहा जा सकता है कि विज्ञापन, सिनेमा एवं बाज़ार ने हिंदी को विकृत एवं अराजक बना दिया है। वह दिन दूर नहीं है जब यह कहा जाने लगेगा कि हिंदी को व्याकरण के बंधन से मुक्त कर दिया जाए। व्याकरणविहीन हिंदी की कल्पना कैसी होगी? विचारणीय तथ्य है। रोज़मर्रा की जिंदगी में हिंदी के कितने शब्दहम आज इस्तेमाल कर रहे हैं? इस हिंदी का भविष्य क्या होगा? यह हमें दिखाई देने लगा है।

किसी भी भाषा का विकास उसकी लोक सम्पृक्ति एवं उसमें निहित ज्ञान से आंका जाना चाहिए। आज की हिंदी में किस प्रकार के ज्ञान का प्रचार-प्रसार हो रहा है। मुझे नहीं लगता कि हिंदी किसी गंभीर ज्ञान का संवाहक बन रही है। आज हिंदी का प्रयोग वस्तुओं की बिक्री एवं सामान्य बातचीत या हल्के-फुल्के मनोरंजन के लिए होता है। भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रांति को आधार बनाकर हिंदी के पक्ष में दलीलें दी जाती हैं। अगर हम अंग्रेजी की तुलना में हिंदी का इंटरनेट में प्रयोग को देखें तो हमारे सामने कैसी तस्वीर उभरती है? एकाध सॉफ्टवेयर एवं ब्लॉगका विकास एवं निर्माण से अंग्रेजी के बरक्स हिंदी कहीं नहीं ठहरती है। हिंदी अपनी जीवंतता एवं रंगत खो रही है। वह अपने लीक से कट गयी है। उसके स्रोत

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

को ही बंद करने की अप्रत्यक्ष साज़िश चल रही है। इससे हमें सावधान रहना होगा। जब हम आँकड़ों के खेल में उलझते हैं तो गुणवत्ता एवं जीवंतता को भी ध्यान में रखें। अगर हम देखें तो हिंदुस्तान में अंग्रेजी प्रतिदिन मजबूत हो रही है, उसकी तुलना में हिंदी अपनी जड़ से ही कट रही है। बिना अपनी भाषा के आम हिंदुस्तानी की कल्पना ही भयावह प्रतीत होती है। आज हमारी भाषाएँ अंग्रेजी भाषा एवं उससे बने समाज के पीछे भटक गयी हैं। उनका अनुकरण एवं अनुसरण करने में हम अपनी राह भूलते जा रहे हैं। आज की हिंदी पर ही भविष्य की हिंदी का अस्तित्व निर्भर करता है। हमें बाज़ार के निहितार्थ को समझना होगा। यह विडम्बना ही है कि हिन्दुस्तान में हिंदी न तो शासन की भाषा है और न ही संवाद की। कुछ मजबूरियाँ हैं जिसके कारण बाज़ार हिंदी को अपनाने के लिए विवश हो रहा है, लेकिन वह दिन दूर नहीं जब यह विवशता भी समाप्त हो जाएगी।

हिंदी के वैश्विक स्वरूप का विश्लेषण करने के लिए दो वर्ग निर्धारित किये जा सकते हैं। पहले वर्ग में उन देशों को शामिल किया जा सकता है, जहाँ अनपढ़ भारतीय मजदूर के रूप में गए। इनमें फिजी, सूरीनाम, मॉरिशस इत्यादि देश हैं। दूसरेवर्ग में उन देशों को शामिल कर सकते हैं जहाँ पढ़े-लिखे भारतीय बेहतर रोजगार एवं शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से गए। इनमें इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, जापान, रूस, अमेरिका, कनाडा आदि देशों को शामिल किया जा सकता है। फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस आदि तीसरी दुनिया के देशों में मुख्य रूप से बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूर गये थे, इनकी मातृभाषा भोजपुरी एवं अवधी थी, हिंदी का ज्ञान उन्हें नहीं के बराबर था। हजारों की संख्या में दो-चार लोग हिंदी बोल एवं लिख सकते थे रामायण एवं गीता का पाठ वे अभ्यासवश ही करते थे। हाँ उनके पास लोकगीतों का व्यापक भण्डार था, जो अवधी एवं भोजपुरी बोली में गाये जाते थे। इस प्रकार उनकी हिंदी के निर्माण में रामायण, गीता एवं लोकगीतों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यहाँ के भारतवंशियों के लिए हिंदी उनके अस्तित्व से जुड़ी है। यहाँ पर हिन्दी उनकी भावना से जुड़ी है, यही उनके इतिहास, परंपरा एवं मातृभूमि से जोड़ने का एकमात्र साधन के रूप में है। इसलिए उन्होंने अपनी हिंदी को बहुत सावधानी से विकसित किया, जिससे उनकी संवेदनशीलता को माकूल अभिव्यक्ति मिल सके। हम कह सकते हैं कि इन देशों में हिंदी की स्थिति एवं विकास हिंदुस्तान से बेहतर है। वह अपनी अनगढ़पन में ही संवेदनात्मक गहराई को आत्मसात करती है। हिंग्रेजी में रचित साहित्य हमारे मर्म को भेदने में असमर्थ हो जाता है। लेखक एवं उनकी रचनाएं हास्यास्पद प्रतीत होने लगती हैं।

अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड आदि देशों में पूरे भारत से लोग गए या जा रहे हैं। उनके पास पहले से ही एक समृद्ध भाषा (बोली) थी, साथ ही अधिकांश लोग अंग्रेजी भाषा से भी परिचित थे। हिंदी उनके लिए कहने मात्र के लिए राजभाषा है। बंगाली, पंजाबी, तमिल, मलयाली, हिंदी की जगह अपनी मातृभाषा को तरजीह देता है। उसके लिए हिंदी से ज्यादा महत्वपूर्ण अंग्रेजी हो जाती है। इस प्रकार वह पारस्परिक व्यवहार के लिए अपनी मातृभाषा को प्रयोग में लाता है एवं रोजगार एवं शिक्षा के लिए अंग्रेजी को अपना माध्यम बनाता है। आशय यह है कि इन देशों में हिंदी की स्थिति एवं अस्तित्व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से जुड़ जाती है। वीरेंद्र सिंह यादव हिन्दी के विकास को उल्लेखित करते हुए लिखते हैं कि "हिन्दी को वैश्वीक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों ,विज्ञापन अजेंसियों ,बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधायों का विशेष योगदान है । आज हिन्दी वैश्वीक मीडिया की चहेती भाषाओं में से एक है । वह जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय और

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज विश्व में सबसे अधिक पढे जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं " (हिन्दी का वैश्वीक संदर्भ ,पृष्ठ .. 04) ऐसे ही कुछ अन्य उत्साही विद्वान आंकड़ों द्वारा यहसिद्ध करना चाहते हैं कि अमेरिका में लगभग सौ संस्थाओं में हिन्दी सिखाई जाती है, दुनिया के लगभग एक सौ पचास विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है। सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी में प्रतिवर्ष प्रकाशित होती हैं। चीन, जापान, जर्मनी, कोरिया, फ्रांस एवं इंग्लैंड में लोग हिंदी के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। अगर हम तुलनात्मक आधार पर देखें तो हमारे पास एक नयी तस्वीर उभर कर सामने आती है। हिंदुस्तान में सरकारी प्रयास से लगभग पाँच सौ विश्वविद्यालयों एवं हजारों की संख्या में महाविद्यालयों में अंग्रेजी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। लगभग पचास सरकारी संस्थाओं द्वारा विशेष रूप से अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन, जापानी, चीनी, कोरियन भाषाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इन भाषाओं के लिए हिंदुस्तानी सरकार एकल विश्वविद्यालयों की स्थापना कर रही है। इनकी तुलना में हिंदी कहाँ ठहरती है? विचारणीय सवाल है। विडम्बना यह है कि इन संस्थानों में हिंदी की कोई जगह नहीं है। तात्पर्य यह है कि हिंदी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष देश एवं विदेश दोनों जगह कर रही है। इस स्थिति में मुझे नहीं लग रहा है कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल एवं सुखद बनने वाला है। अन्य भाषाओं के सापेक्ष हिंदी को रख कर देखें तो हिंदी अपनी संवेदनशीलता, लोकोन्मुखता, वैज्ञानिकता, लयात्मकता से विलग होकर अपनी विशिष्ट पहचान के लिए ही संघर्ष करती हुई परिलक्षित हो रही है। मातृ-भाषा के अभाव में हिंदुस्तानी संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास के बोध का निर्माण रुक जाएगा, जिसके कारण हमारी विशिष्टता ही नष्ट हो जाएगी। क्योंकि किसी भी शब्द का निर्माण लम्बी ऐतिहासिक प्रक्रिया में संपन्न होता है। समय-समय पर उसमें संस्कृति, परम्परा, मूल्य, मिथकों द्वारा अर्थरूपी रंग भरा जाता है, यथा — 'माता' शब्द में हमारी पूरी परंपरा ध्वनित होने लगती है। 'मम्मी' या 'मॉम' शब्द से संवेदनात्मक गहराई एवं परम्परागत बोध का उत्पन्न होना असंभव है जो 'माता' शब्द में ध्वनित होता है।